साहित्यिक मासिकी

प्रान्ति इंडिया

ISSN : 9334-0970

मार्च 2025, मूल्य 50/-

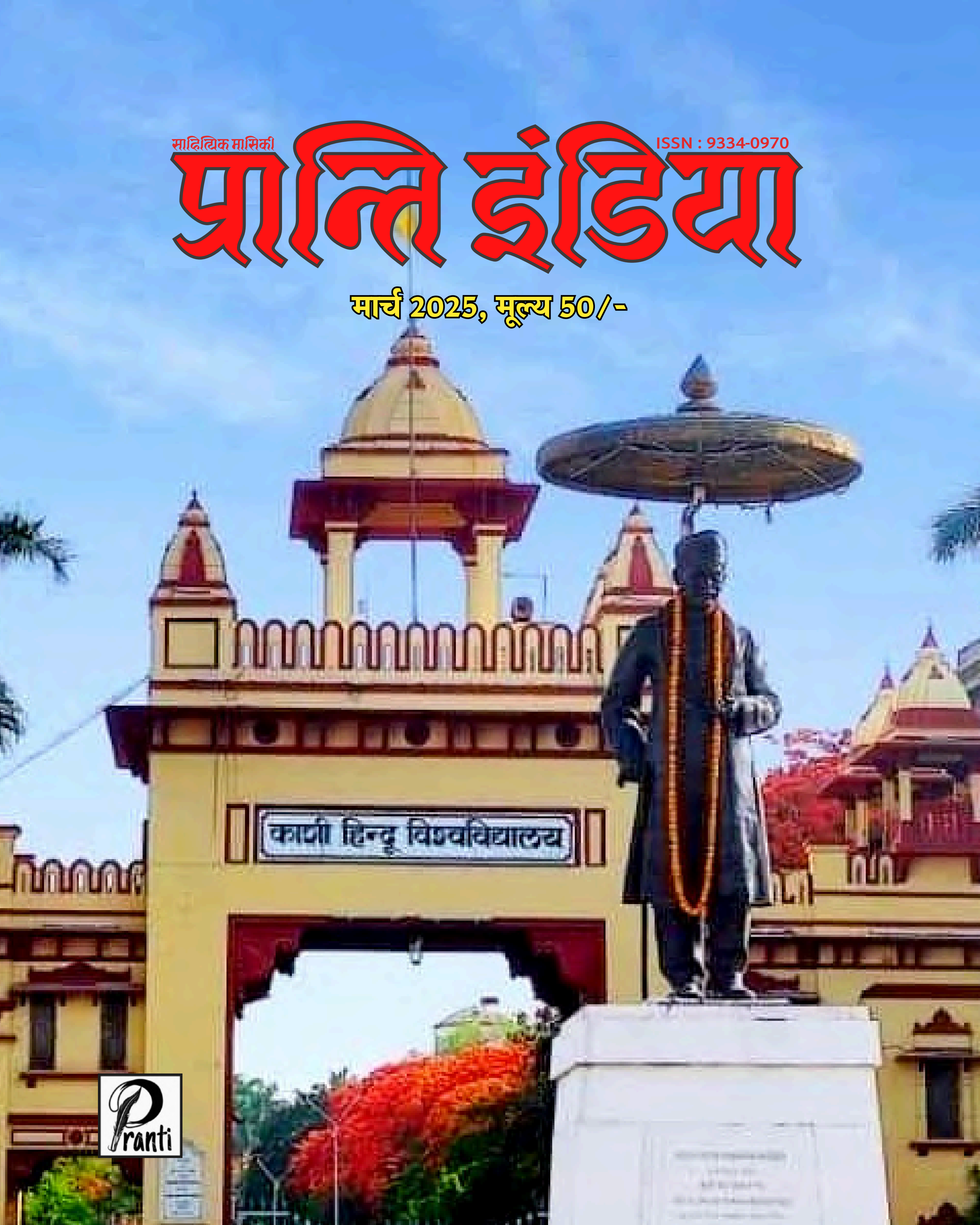

साहित्यिक
मासिक पत्रिका

प्रान्ति इंडिया का वार्षिक सब्सक्रिप्शन

~~MRP ₹2500~~

आपके घर पर मात्र ₹1100 में

एक साल में 12 पत्रिकाएं

कृपया www.prantiindia.com/subscription पर जाएं।

प्रान्ति इंडिया

मार्च 2025, मूल्य 50/-

प्रधान संपादक

आदित्य कुमार प्रसाद
(ए. के. प्रसाद)

वरिष्ठ संपादक

डॉ. लेखराज शर्मा

कार्यकारी संपादक

डॉ. शंभु दयाल अग्रवाल

सहयोगी संपादक

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

ध्यान दें कि सामग्री संपादित करते समय यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी, यदि कुछ त्रुटियाँ रह गई हो तो इसके लिए स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादक उत्तरदायी नहीं होंगे।

अनुक्रम

- संपादकीय
- पेंटिंग ऑफ द अंक
- लड़कियाँ
- गोरैया
- मुट्ठी में आकाश करो
- कोलकाता की यात्रा
- और फिर मैं पढ़ न सकी
- बचपन बचाओ
- होली के रंग निराले
- परीक्षा पर चर्चा
- रील्स व साहित्य
- दोस्त v/s दीदी

शेष अगले अंक में..!

प्रान्ति इंडिया (मासिक पत्रिका) एवं संगठन कार्यकारिणी
पंजीयन : बीआर-35-0029626, आईएसएसएन : 9334-0970
मुख्य कार्यालय : #495, पुरानी बाजार, बगौरा, सीवान-841404 (बिहार)
संपादकीय कार्यालय : जे.11/125, ईश्वरगंगी, वाराणसी-221001 (उत्तर प्रदेश)
कार्यालयी संवाद : +91 94-535354-95, संपादकीय विमर्श : +91 7258072725
अंतरजाल ठिकाना : www.prantiindia.com, ई-मेल : editor@prantiindia.com

संपादन सलाहकार

डॉ. गुलाबचन्द पटेल, डॉ. प्रेमलता यदु, डॉ. गायत्री कोंपल, डॉ. अनिता जठार, डॉ. वीरेंद्र कुमार दूबे, डॉ. प्रदीप कळसकर, डॉ. मुकेश कुमार दूबे, डॉ. अखिलेश कुमार शास्त्री, डॉ. हरिवंश शर्मा, डॉ. अखिलेश कुमार तथा डॉ. तुहिना प्रकाश सिंह जैसे विषय विशेषज्ञ।

दैनंदिन सहयोग

विवेक रंजन, बाल मुकुंद द्विवेदी, रवि ऋषि, अच्युत उमर्जी, नीरज वर्मा, नेहा चौरसिया, विनोद प्रसाद, अरुणप्रिय, दमदार बनारसी, प्रेमलता चांदना, दिव्यांजलि वर्मा, वृंदावन राय सरल, मनोज कुमार सिंह, भोला शरण प्रसाद, सुनील शर्मा, मुकेश जोशी, कमला उनियाल, शशीधर कुमार, अंजना गोमस्ता, श्वेता खरे, पूनम लता, इला कुमारी, किरण कुमारी, नीरज पखरोलवी, प्राची तिवारी, गौतम आनन्द, इंद्रजीत दूबे, शुभांगी चौहान, मनीषा मिश्रा, सुभाष चंद्रा, सुन्नी सिंह तथा कमलेश जिज्ञासु समेत अन्य सैकड़ों आधार स्तम्भ।

प्रिय रचनाकार! यदि आप भी लिख रहे हैं, लेकिन परेशान है?
कि आखिर आपकी पाण्डुलिपि कहाँ छपेगी! तो अब निराश होने की जरुरत नहीं है।
आप अपनी रचनाएं डाक अथवा ई-मेल द्वारा हमारे संपादकीय कार्यालय में भेज सकते हैं।
अधिक जानकारी के लिए हमारे आधिकारिक वेबसाईट पर जाएं।
WWW.PRANTIINDIA.COM

||संपादकीय||

हम जानते हैं कि जीबन की गहराइयों में उतरने के लिए, हमें साहित्य की दुनिया में प्रबेश करना होता है। साहित्य हमें जीबन की बिबिधताओं, उसकी खुशियों और दुखों, उसकी चुनौतियों और उपलब्धियों को समझने का अबसर प्रदान करता है। साहित्य हमारे समाज का एक महत्बपूर्ण हिस्सा है, जो हमें जीबन की गहराइयों को समझने और उसके मूल्यों को पहचानने में मदद करता है। यह हमें जीबन की बिबिधताओं को देखने और समझने का अबसर प्रदान करता है, और हमें अपने जीबन को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन साहित्य की महता केबल जीबन की गहराइयों को समझने तक ही सीमित नहीं है। यह हमें समाज में सकारात्मक परिबर्तन लाने के लिए भी प्रेरित करता है। साहित्य हमें समाज की समस्याओं को समझने और उनका समाधान खोजने में मदद करता है, और हमें समाज में सकारात्मक परिबर्तन लाने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए, हमें साहित्य की महता को समझना चाहिए और इसके माध्यम से जीबन की गहराइयों को समझने का प्रयास करना चाहिए। हमें साहित्य को समाज में सकारात्मक परिबर्तन लाने के लिए एक शक्तिशाली औजार के रूप में उपयोग करना चाहिए। इस मासिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया के माध्यम से, हम आपको साहित्य की दुनिया में ले जाने का प्रयास करेंगे, जहां आप जीबन की गहराइयों को समझने और समाज में सकारात्मक परिबर्तन लाने के लिए प्रेरित हो सकेंगे। आइए, साहित्य की दुनिया में प्रबेश करें और जीबन की गहराइयों को समझने का प्रयास करें। यदि आपको पत्रिका में कोई कमी दिखे या फिर पत्रिका के आगामी अंक को और बेहतर बनाने के लिए आप कोई सुझाब देना चाहें तो बेझिझक अपनी प्रतिक्रिया हमारे आधिकारिक ई-मेल editor@prantiindia.com पर अथबा संपादकीय कार्यालय में भारतीय डाक की सहायता से भेजें। आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

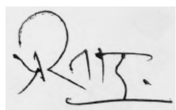

संपादकीय पत्र व्यवहार
संपादक संपादकीय कार्यालय जे.11/125 ए-1, ईश्वरगंगी वाराणसी-221001 (उत्तरप्रदेश) दूरभाष : +91 94-535354-95

पेंटिंग ऑफ द अंक

श्रेया चौहान, गोरखपुर
☎ 8858113630

लड़कियाँ

पिताओं के स्वाभिमान को
अपना स्वाभिमान बेच,
बचाती आ रहीं लड़कियाँ।
उनके जमाईयों को पति कह-कहकर,
ससुराल की घुड़कियाँ सह-सहकर।

दक़ियानूसी माताओं के कलेजों को
अपने सपनों को लताड़,
ठंढक दिलातीं लड़कियाँ।
घर की देहरी मे पिस-पिसकर,
रूढ़ियों का सिलबट्टा घिस-घिसकर।

महान सामाजिक आदर्शों को
अपने ज्वलित मन को मौन रखकर,
तथाकथित कोमल कंधों पर ढोतीं, लड़कियाँ।
परदों मे खुद को कस-कसकर,
सड़कों पर हरदम बच-बचकर।

पुरुषों के गौरव(?),उनके मर्दानेपन को
ढीठ बच्चे की ज़िद मानकर,
घृणित होकर भी पुचकारते आ रहीं, लड़कियाँ।
अपने अस्तित्वपटल पर मिट-मिटकर,
गाहे-बगाहे पिट-पिटकर।

युवराज सिंह
छात्र, हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
☎ 9305199972

गोरैया

आँगन में फुदके सदा, चहके मीठी तान।
नन्ही गोरैया भली, मन हर ले पहचान।।
डाली-डाली उड़ रही, पंखों में है जोर।
छोटा तन लेकिन बड़ा, साहस भरा विभोर।।

घर के कोने बिन रही, तिनका तिनका जोड़।
निज परिवार बसाएगी, श्रम से नाता जोड़।।
बाग-बगीचे हर जगह, फैले इसका प्यार।
धरा सजे संग इसके, सुंदर इसका संसार।।

भोर सकारे गूँज उठे, इसकी मीठी तान।
संग सुरीले गीत के, जागे नव अरमान।।
खेती-बाड़ी लाभ मिले, खाए कीट-पतंग।
धरती माँ की मित्र यह, संग बजे मल्हार।।

पेड़ लगाकर दीजिए, इसको प्यारा ठौर।
फिर से चहके चौक में, गाए मधुर विभोर।।
शुद्ध हवा, हरियालियाँ, जब होगी भरपूर।
नन्ही चिड़िया फिर उड़ें, धरती लगेगी नूर।।

शशिधर कुमार, नोएडा
☎ 9990504600

मुट्ठी में आकाश करो

इक-इक पल है कीमती जानो
स्वयं से तुम संवाद करो।
व्यर्थ की बातों में उलझकर
न वक्त अपना बर्बाद करो।।

मिलती सफलता उसको निश्चित
जिसने चित्त में ठाना है।
अंतक भी रास्ता रोक ना सका
जिसने खुद को जाना है।।

मत करो प्रतीक्षा अगले क्षण की
करना है जो आज करो।
समय बहुत है पास हमारे
इस सोच का तुम त्याज्य करो।।

कर लो वादा स्वयं से आज तुम
नहीं कभी भरमाओगे।
करोगे ना पीछे पग को कभी
ना ही तुम घबराओगे।।

उठो चलो और चलते चलो
संघर्षों का आगाज करो।
साधोगे लक्ष्य को अवश्यमेव
स्वयं पर तुम विश्वास करो।।

समय को कोई रोक सके
ऐसा संभव हो न पाया है।
जिसने समय का साथ निभाया
वो सिकन्दर कहलाया है।।

उठो बढ़ो और बढ़ते जाओ
स्वयं का तुम विस्तार करो।
हाथ बढ़ा कर सुन मेरे वत्स
अब मुट्ठी में आकाश करो।।

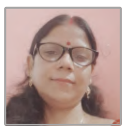

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मुंगेर, बिहार
☎ *7004103516*

कोलकाता की यात्रा

मुझे बचपन से ही दर्शनीय स्थलों एवं धार्मिक स्थलों की यात्रा करने की चाहत थी। जब भी अवसर मिलता मैं उसे गँवाना नहीं चाहती हूँ। अभी कुछ दिन पहले मुझे अलीपुर संग्रहालय जो पहले अलीपुर जेल के नाम से विख्यात था, जाने का अवसर मिला। मैं अपने इलाज के लिए कोलकत्ता गई थी। वहीं मुझे इस संग्रहालय का पता चला ,तो उसे देखने की मेरी इच्छा प्रबल हो गई ।जब मैं वहाँ गई तो सर्वप्रथम वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य ने मुझे मोहित किया। खुला- खुला वातावरण, पेड़ों की हरियाली, चिड़ियों की चहचहाहट सबों ने मिलकर वहाँ के वातावरण को मदमाती बना रहा था। अलीपुर संग्रहालय जो आजादी से पहले अलीपुर जेल (कारावास) था, जहाँ आजादी के दीवानों को कैद कर रखा जाता था

प्रेसीडेंसी सुधारगृह जिसे प्राचीन अलीपुर जेल के नाम से जाना जाता था,बंगाल की पहली केंद्रीय जेल के रुप में ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। ब्रिटिश शासन के दौरान यह उन राजनीतिक कैदियों के लिए कारावास की जगह है के रूप में कार्य करता था, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह करेक्सनल होम ऐतिहासिक स्थल है। 116 साल पुरानी इमारत प्रेसीडेंसी जेल के साथ कोलकाता के विरासत स्थलों की ग्रेड है।1906 में निर्मित और 15.2 एकड़ में फैला यह औपनिवेश युग का संगठन है ।इस सेंट्रल जेल मैं जो कलकत्ता में ब्रिटिश शासन के तहत राजनीतिक कैदियों को रखा जाता था। इसमें अलीपुर जेल प्रेस भी था।अब यह जेल के रूप में परिचालन में नहीं है।20 फरवरी 2019 को यह जेल बंद कर दिया गया और इस स्थल को उन शहीदों के नाम पर एक स्वतंत्रता संग्रहालय के रूप में विकसित किया गया , जहाँ कैदियों को फांसी दी जाती थी। इस स्थल को देखते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए।पूरा शरीर रोमांचित हो चुका था। अनायास ही उन शहीदों की उस मूर्ति के समक्ष मै नतमस्तक हो गयी।

अलीपुर संग्रहालय की उदास पृष्ठभूमि देखकर अनायास ही स्वतंत्रता संग्राम में हुए शहीदों की कुर्बानी याद आ गयी। ऐसा लग रहा था मानों चारों और बंदे मातरम् और भारत माता की जय नारे सुनाई पड़ रहे थे। इसके परिसर में प्रवेश कर ऐसा महसूस हो रहा था जैसे स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा झेली गयी अत्यधिक पीड़ा के युग से साक्षात्कार हो रही है । यह गर्व की बात है कि स्वतंत्रता सेनानी के जेल की सजा काटने में गर्व महसूस करते थे।

संग्रहालय के अंदर देखने लायक कई दिलचस्प जगहें हैं।फाँसी का तख्ता, अस्पताल भवनों स्थायी प्रदर्शनी है नेता जो वार्ड, जवाहरलाल नेहरू वार्ड, विद्या चंद्र राय सेल, चितरंजन दास मोहन सेल, यतिंद्र सेन वाच टावर और अन्य चीजें हैं जो वास्तव में देखने लायक है। फाँसी का फंदा मन को झकझोर देता है। परिसर में कदम रखते ही उन हजारों शहीदों के विचार से घिर गयी, जो फाँसी के तख्ते तक पहुंचे थे और फिर कभी नीचे नहीं उतर पाए। वहीं तख्ते खाने में जाने की सीढिया थी, जहाँ बोर्ड लगा है ।मेडिकल रूम है ,जहाँ डॉक्टर सरकारी कैदियों की जाँच करते थे ताकि सुनिश्चित हो सके क वास्तव में मर चुके हैं। यह सब एक ऐसा अनुभव था जिससे रोंगटे खड़े हो जा रहे थे। वहाँ के विशेषज्ञों ने बताया कि जेल पाँच इमारतों को बहाल कर दिंया गया और इन इमारतो से संग्रहालय की यात्रा शुरू की गयी। संग्रहालय में प्रदर्शित हर कलाकृति मन को मोहने वाली मन को होने वाली है। वे कोठरियाँ जहाँ प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के कैद किया गया था, अब वे केंद्रीय निगरानी टावर परिसर के उन हिस्सों में से है ,जो अब जनता के लिए खुले हैं। वहाँ पूरा संग्रहालय देखने का पश्चात परिसर में ही खुले कॉफी हाउस में हम लोगों ने काफी पी। फिर वहाँ से रवाना हो गए। वास्तव में अलीपुर जेल अर्थात आलीपुर संग्रहालय की मेरी यह यात्रा काफी रोमांचक रही। आज भी वहाँ के माँ दुर्गा की मूर्ति की कलाकृति, कारागार, युद्ध में प्रयोग किए गए बंदूक, गोली ,फाँसी के फंदे सब की छवि जेहन में उतर गई है।जिसे देखकर देश की आजादी की कहानी जीवंत हो उठाती है। यह रचना यात्रा के दौरान अर्जित अनुभवों एवं जानकारियों पर आधारित है।

पूनम लता, नोएडा
☎9470932997

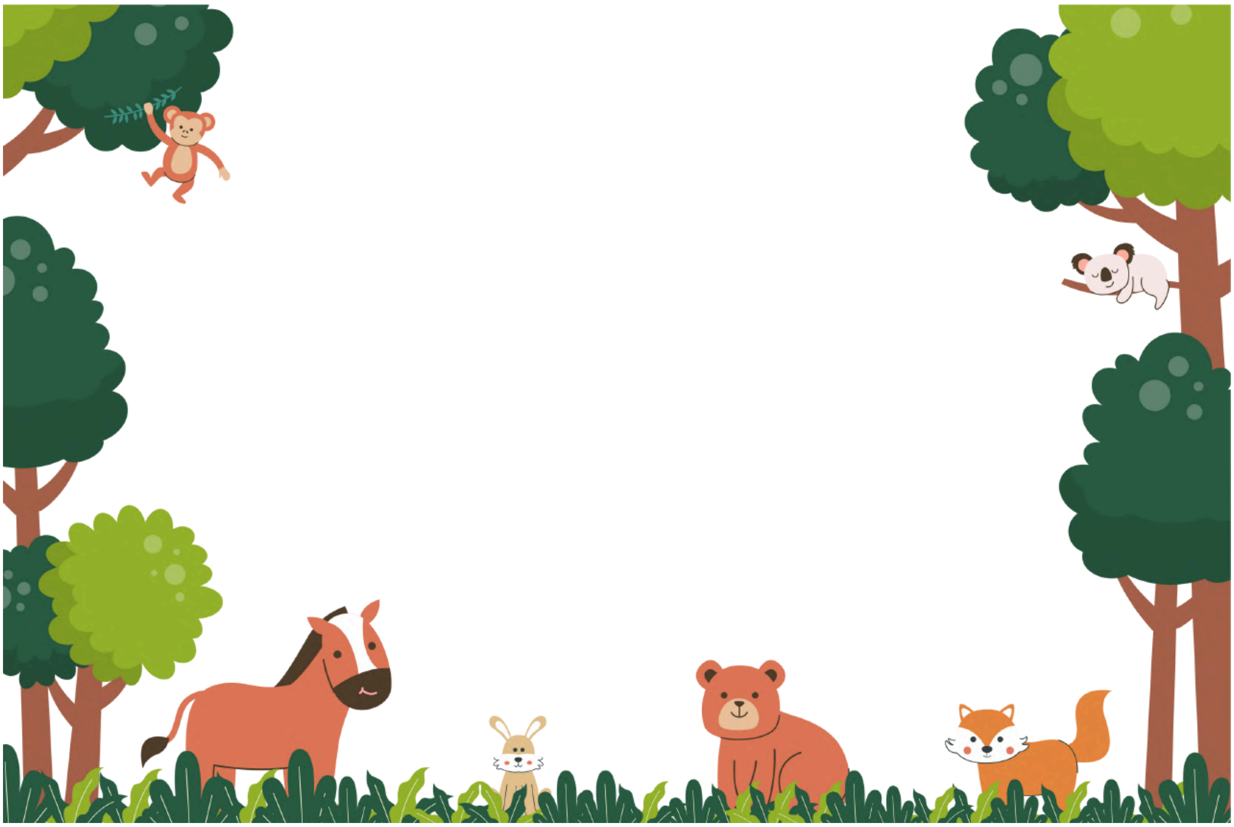

और फिर मैं पढ़ न सकी

मेरा गांब ऐसी जगह बसा है जहाँ पर आने -जाने के साधनों का टोटा है। मुख्य रास्ते पर आने के लिए कोई सीधा रास्ता नहीं बल्कि जो रास्ते हैं बे भी घुमाबदार। इनको कभी गलियारा कहा जाता था। आज भी जो बूढ़े पुरुष और महिलाएँ है , बे इन रास्तों को गलियारा ही बोलते हैं। सरकारी योजनायें तो अब गांब - गांब पहुँच गई हैं जिनके चलते इन गलियारों को खड़न्जे मे तब्दील कर दिया गया है। कुछ जगह पक्की सड़कें भी दिख जाती है। लेकिन कहते है कि गधे को धोकर घोड़ा नहीं किया जा सकता हैं। खड़न्जे और पक्की सड़कें हैं। पक्की नालियां भी बन गई हैं लेकिन रास्ते इतने संकरे है कि बराबर से दो गाड़ी निकालना मुश्किल काम है। नक्शे पर ये रास्ते चौड़े है मगर आसपास के खेत मालिकों ने अपने खेतों का आकार बढ़ाने में इतनी मशक्कत की है कि उसमें ही ये रास्ते समा गए हैं। हालांकि इन रास्तों पर निकलते हुए दोनों तरफ हरे-भरे लहलहाते फसलों के खेत देखकर तबीयत हरी हो जाती है। नालियाँ तो कूड़े से पटी पड़ी हैं। संकरी गलियां बढ़ती आबादी और मनुष्य की नीयत के चलते पगडण्डी में तब्दील हो चुकी है। सरकार की स्वच्छता योजना को जैसे ये चिढ़ा रही हों। बची -खुची दरबाजे के सामने सड़क किनारे खाली जमीन पर कूड़े कचरे के ढेर और गोबर के उपले हैं। कौन कहे ?. कौन लड़ाई मोल ले? यहाँ तो यह कम्पटीशन सरीखा है।

दो खेत दूर गांब के उत्तर में एक छोटी नदी बहती है। जो शारदा की जलधारा की सहायिका भर है। हम अक्सर अपनी बहनों और सहेलियों के साथ खेलते -कूदते नदी की तलहती का आनन्द भी उठाते है। जाड़े भर तो इधर ही आकर खेतों से बथुआ और सरसों तथा चने का साग बीन कर घर ले जाते हैं। हालांकि हमारे खेत नहीं हैं। जिससे लोग बथुआ बीनने को तो मना नही करते है पर सरसों और चने का साग तो चुराना ही पड़ता है। इतना पैसा भी नही कि घर बाले बाजार से खरीद लायें। गांब में तो ये सब चलता भी है।

बथुआ बीनते - बीनते मेरी नजर पास के खेत पर पड़ी। " ये छोटी जरा देख कर आ इस परदे बाले खेत में बर्मा ने क्या बो रखा है।" मैने अपनी छोटी बहन से कहा।

" हाँ जिज्जी।" बह खेत की ओर बढ़ गई।

" जिज्ञी !"

बह चौंकी फिर बोली - " इसमे तो मटर फली है । " कहते - कहते उसने मटरफली के दो - चार गुच्छे झपट लिए ।

बो कहते है कि बचपन बड़ा अनूठा होता है । उसपर अगर गरीबी की मार पड़ जाए तो फिर ... . ।

ऐसी ही मेरी लपक - झपक जिन्दगी में एक तूफान आ गया था । गरीबी की मार खाया मेरा परिबार मेरी बीमार मां का इलाज न करा सका । बह छोड़कर चली गई । मेरे औसुओं के सैलाब में सब कुछ बहा जा रहा था । मेरी उम्र अभी दस बरस की रही होगी । पिता के दुलार ने दौदस बैंधाया ।

उस समय मां की याद और मेरे कलेजे उठती बेचैन हूक को पिता की मीठी और स्नेहिल बोली से ठंडक मिली । एक बड़े भाई और बड़ी बहन में अब मेरी मां नजर आने लगी थी । मै अक्सर पिता की उस एक पाए टूटी चारपाई पर पुराने बिस्तर पर लिपट कर सो जाती थी । उनकी सुनाई जाने बाली कहानियों से मन बहल जाता था । धीरे - धीरे मां की याद धूमिल हो गई ।

गाँब के ही प्राइमरी स्कूल मे ही पिता ने हम भाई -बहनों का दाखिला करा रखा था । बदलते जमाने में पिता की सोच भी नई थी । बे हम सबको पढ़ाई के लिए लगातार प्रेरित करते थे।

हाईस्कूल से इण्टर और फिर मैने बी०ए० पास कर लिया था । बड़े भाई की शादी करीब चार साल पहले हो चुकी थी । दो बच्चे भी हो गए । इसी बीच बड़ी बहन का भी ब्याह हो गया और बह अपनी ससुराल चली गई । मेरी भाभी एक नौकरी करती थी जिसके चलते मुझे उनके बच्चों का खयाल रखना पड़ता था । यहाँ तक कि मैं अपने पिता के कपड़े भी धोती थी । एक दिन मेरी नजर पिता की चप्पलों पर पड़ी । बह इतनी गंदी थी कि मुझसे रहा नहीं गया। मेरे पिता एक खेत - मजदूर थे दूसरे माँ के जाने के बाद से तो बे अपनी सुध ही नही रखते थे । मुझे उनकी चप्पलें धोता देख ताऊ जी बोले - " यह क्या अनर्थ करा रहा रे राजपा लमरा।" मेरे पिता का नाम राजपा लमरा जिन्होंने ही बड़े दुलार से मेरा नाम ' मनोरचना ' रखा था। यद्यपि बह खुद पढ़े लिखे नहीं थे फिर भी मेरे नाम से ऐसा नही लगता।

ताऊ जी के टोकने पर पिताजी मुझे डांटने लगे । " इस लड़की से कई बार कहा है कि लड़कियां पिता के लिए पूज्य होती है।" कहते हुए उनका गला भर आया । "अगर आज जिन्दा होती इसकी माँ तो ये सब नहीं करना पड़ता । " इतना सुनते ही मैं उठकर अन्दर घर में चली गई । माँ की याद मेरे मन में कौध गई थी । जिसके चलते मुझे सुध न रही और मै घर घुसते बक्त छप्पर की ओरबनी (ओरी) से सिर टकरा गया । माथे पर एक छोटा गुल्म (अभार) सा पड़ गया ।

मेरा अधिकांश घर कच्चा था । जहाँ बाहर -भीतर छप्पर ही छप्पर थे । जिनकी कम ऊँचाई के चलते अक्सर सिर में चोट लगती थी । बाहर बड़ा सा आगननुमा मैदान जिसमे जलाने बाली लकड़ी , सरकण्डे के ढेर, ताजे गोबर के उपले । एक कोने में ताजे गोबर का ढेर जो उपलों या सरकण्डों में तब्दील होने का इन्तजार कर रहा है। उसकी गंध तो आस गुजरने बालों को सूंघनी पड़ती है । यह भी एक आदत सी हो गई है । कभी - कभी पछुआ बयार के झोंकों के साथ गंध घर के आंगन तक भी पहुँच जाती है । बहीं पास में कुछ पेड़ो की टूटी डालें । बांस की पाटियों से बनी चारपाई , साथ ही खेत जोतने बाले हल , पाटे और माची सहित बही पर एक कोने में छोटा सा गड्ढा था । जिसमें जाड़े के मौसम में पिता जी कोड़रा (आग) जलाकर देर रात तक बैठते थे । बहीं गांब मुहल्ले के लोग भी इकट्ठा होकर आग तापा करते । पिता किसानी करते और भाई - भाभी प्राइबेट नौकरी ।

गांब रजबाड़ों का बसाया हुआ था । उनके बंशजों की हुकूमत आज भी देखने को मिल जाएगी । दलित और पिछड़ों के इस गांब में राजा साहब के परिजनों को छोड़कर कोई भी ऊँची बिरादरी का नही था । उनका दबदबा कायम था।

बह भी इतना कि बड़े कुंबर जी के सामने तो मजाल है कि बराबर कोई बैठ जाए । जब बह शहर से गांब आते तो कुछ खास किस्म के लोग उनसे मिलने कोठी पर जाया करते । बही उनके गुप्तचर भी थे । जो बताते किसके घर में क्या चल रहा है । किसका बोट किधर जाने बाला है। किसकी बेटी जबान हो गई है । जब बड़े कुंबर किसी के दरबाजे पर जाते तो उनके कारिन्दे पहले ही पहुंचकर चारपाई और उसपर कालीन डालकर इंतजार करते। उनके बैठने पर ही पूरा गांब जमीन पर उकडूं बैठता । ऐसे गांब में सरकारी फरमानों ने बहुत कुछ नया कर दिया था । जिसमें ' सोंच ' की कोई जगह नही थी । रजबाड़े भी चुनाब के लालच में स्वभाब से बदल गए थे । घर - घर बेटों के साथ बेटियां भी पढ़ने लगी थी । उनके सपनों को पंख लग चुके थे

मेरी ज़िन्दगी और दुनिया दोनों बदल रही थी । पिताजी की मिठास भरी बोली में कड़बाहट से घुलने लगी थी। भाई और भाभी ने अपनी दुनियां से मुझे अलग करना शुरू कर दिया । मैं बोझ होने लगी। मुझे यह तब पता चला जब मेरा नाम बी०टी०सी० कोर्स में पढ़ने के लिए आया । मैंने कालेज जाकर जानकारी कर ली थी। काउन्सिलिंग शुरू हो चुकी थी और मैने भी सारे कागज बनबा लिए थे । पिता जी बोल रहे थे कि " तू जितना चाहे , पढ़ ले।"

'हाँ ठीक तो रहेगा ।" भाई ने भी बोल दिया था । बस अगर कोई मौन था बह थी मेरी भाभी।

" सर मुझे एडमिशन लेना है।" मैंने कालेज में जाकर पूछा ।

" क्या खर्चा आएगा दोनों साल का ?"

"यही कोई सालाना इकतालीस हजार फीस। " उन्होंने काउन्सिलिंग करबाने को कहा तो मैं कम्प्यूटर ऑपरेटर के पास गई । काउन्सिलिंग करते बक्त मोबाइल से ओ०टी०पी० की जरूरत पड़ती है । मोबाइल नम्बर मेरे भाई का लगा जिससे ओ०टी०पी० लेना था। इसके लिये कई बार भाई को फ़ोन किया गया लेकिन नहीं उठा। इस तरह से पहला दिन बीत गया । दूसरे दिन कालेज बालों ने फोन लगाकार ओ०टी०पी० माँगा तब भाई ने ओ०टी०पी० दिया। उसने बताया कि - "मै महाकुम्भ नहाने प्रयागराज आया हूँ । " यहाँ से आकर फ़ीस जमा कर देंगे । मुझे लगा कि मेरा यह कोर्स पैसों के अभाब में रह जाएगा। तब मेरे एक करीबी युबा दोस्त ने मेरी मदद करते हुए काउन्सिलिंग फीस जमा करा दी। मेरे भाई प्रयागराज से आ चुके थे । लेकिन अब मेरे जीबन का नया मोड़ आ गया। बह फ़ीस देने को तैयार नहीं थे। ऐसा लगता था कि महाकुंभ मे नहाने के बाद संगम के जल ने भाई - बहन के अटूट बन्धन को खण्ड - खण्ड कर दिया था। मेरे कहने पर उनका जबाब था कि

"पढ़ चुकी जितना पढ़ना था। मेरे पास अपने खर्चे बहुत हैं। शादी में जो खर्च आएगा। बह भी तो मुझे देना पड़ेगा।"

भाई की बातों से पिताजी मुझे कातर नजरों से देख रहे थे । मेरी सारी ख्बाहिशें मन्द पड़ गई थी । कौच सरीखे मेरे सपनो के टूटने की आबाज मेरे कानों में गूंज रही थी । इस शोर में पता चला कि कालेज से कुछ लोग मिलने आए हैं । इस खबर ने मुझमें उत्साह भर दिया था । बह लोग आए तो पिता और भाई ने उनसे बड़ी आत्मीयता से बात की । जिसने मुझे ढांढस बंधाया । इससे उम्मीद की रोशनी भी दिखने लगी । उनके जाने के बाद बह रोशनी फिर गुल हो गई थी । भाभी ने तो बोलना भी बन्द कर दिया । मै अपराधी सी सजा का इन्तजार कर रही थी । दूसरे दिन पिताजी को बहाँ के प्रिंसिपल ने बुलाया । उन्होंने पिता जी कई सारे सबाल भी किये । आज के जमाने बेटियों के स्थान को याद दिलाते थे । पिताजी ने टालने के मूड में कहा - "साहब फीस देने को पैसा ही नहीं है। अगर बजीफा से बन जाए तो देख लीजिए । " पिता जी ने दोहराया। प्रिंसिपल साहब भी मेरे ऊपर उदार थे । उन्होंने कहा - " ठीक है कर लेते बजीफे पर लेकिन काउन्सिलिंग और सीट लॉक आपको ही कराना होगा।" उन्होंने यह भी कहा कि यह एक प्राइबेट संस्था है । ऐसे में मैं पूर्ण निर्णय तो नही ले सकता , फ़ीस की भरपाई के लिए मै यहाँ माली का काम दिलबा सकता हूँ । जिससे तुम्हारी बेटी पढ़ लेगी और चार पैसे भी

तुम्हारे बच जाएगे।" लेकिन बह येन केन प्रकारेण एडमिशन कराने को टाल रहे थे। बोले " लड़का और बहू साथ नही देते है। ऐसे में मै क्या करूँ।" मैंने पिता जी यहाँ तक कह दिया कि जो पैसा मेरी शादी करने में खर्च करेंगे उससे ही पढ़ा दें। पिताजी पिघलने को तैयार नही थे। बह जड़बत हो चुके थे।

मैं रोए जा रही थी।
आसुओं से मेरा बदन भीग रहा था।
यदि कुछ नही भीग रहा था, बह था पिताजी का मन।
क्रूर समय ने करबट बदली और मैं फिर पढ़ न सकी।

डॉ. हरिवंश शर्मा
प्राचार्य
आदर्श जनता महाविद्यालय
☎ 8005002122

बचपन बचाओ

सन् 2007 का मई महीना था। ठीक 8:00 बजे सबेरे सीसीएल की कतिपय कोल परियोजनाओं की काली धूल के अंधड़ को चीरती हुई मेरी कार अंततः नईम के घर को ढूँढ़ने मे सफल हुई। एशिया की तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ कोल-परियोजना 'पिपरबार' से कोई डेढ़-दो किलोमीटर उत्तर बहेरा नामक बस्ती का रहने बाला था, बह। आगे जा कर यह सड़क टंडबा से चतरा और हजारीबाग की दो भिन्न दिशाओं मे मुड़ जाती है।

नईम भारतीय जीबन बीमा निगम, खलारी शाखा का एक खुद्दार और परिश्रमी अभिकर्ता था। उसने मुझे चाय पीने का प्रस्ताब दिया। मैने कहा, लौटने पर। चलते-चलते बह अपनी बेगम, जो उसके पाँच बच्चों की अम्मा थी, को ताक़ीद कर गया कि हम लोग 3:00 बजे अपराह्न लंच लेंगे। ठीक से बनाना। उसने मेरी सहमति लेने की भी जरूरत नहीं समझी।

कोई घंटे भर ड्राइब करने के बाद हम लोग उस गाँब मे थे जहाँ नईम ने कुछ घरों मे बात करके रखी थी। बगल की सीट मे बैठा बह रास्ते भर मुझे समझाते आया था- सर, आप प्लीज ज्यादा नहीं बोलिएगा। मुझे बात करने दीजिएगा। यह पूरा इलाका नक्सल प्रभाबित है। सभी ग्रामीण आदिबासी हैं, भोले-भाले हैं। नक्सली इनकी मासूमियत का फायदा उठाते हैं। नाबालिग लड़कियों को भी बहला-फुसलाकर या ज़बरदस्ती उठाकर ले जाते हैं, उनके हाथों मे बंदूकें ही नहीं थमाते बल्कि उनका यौन शोषण भी करते हैं। पुलिस को सब ख़बर है, मगर बह बेख़बर होने का ढोंग करती है। एलआईसी बालों को यह नक्सली समाजसेबी समझते हैं। लेकिन अन्य सरकारी मुलाज़िमो को बह नहीं बख़्शते।

बह छोटा-सा गाँब, पश्चिम से उत्तर-पूर्ब की ओर बिस्तीर्ण पहाड़, हरे-भरे जंगल। हबा मे हल्की खुश्की, किंतु ग़ज़ब की ताज़गी और सुगंध। मेरा दिल तो बल्लियों उछल पड़ा। पहाड़ों से एक अज़ब अपनापन लगता है मुझे। मेरा बचपन पहाड़ों की दोस्ती मे ही गुजरा है, बड़ी ही सुनहरी और रोमांचकारी यादें जुड़ी हैं। मगर, यहाँ तो उन यादों पर पहरे बिठाने ही पड़ेंगे।

मैने पहाड़ को छूना चाहा, लेकिन नईम ने साबधान किया। सैर-सपाटा छोड़िए, सर। जिस काम से आये हैं उस पर कंसंट्रेट कीजिए। यहाँ पहाड़ो की हरी-भरी गोद मे बंदूकें थामे जंगली भूतों का बसेरा है। याद कीजिए, आप मीटिंग मे अक्सर कहते

हैं- "न जाने किस बेश में नारायण मिल जाएँ"। अपनी बात नईम के मुख से सुनकर मेरी हँसी छूट गई। बह भी इसके अंतर्निहित भाब को समझते हुए खिलखिला कर हँस पड़ा। दो-तीन घरों मे बातें करने के बाद अंततः नईम कामयाब हो गया। दस-ग्यारह साल की बिखरे बालोंबाली काले रंग मे सुंदर नैन-नक्श की एक लड़की, उदास-गुमसुम मेरे सामने आकर खड़ी हो गई। नईम ने उसके माँ-बाप को सब कुछ समझा दिया था। प्रत्येक माह का बेतन भी तय हो गया। नईम ने स्थानीय भाषा मे पुनः कहा, सर की श्रीमतीजी अध्यापिका हैं। बह ख़ुद इसे पढ़ाएँगी और स्कूल मे पढ़ने भी भेजेंगी। बस काम यही है कि मैडम के दो बच्चे हैं। एक छोटा लड़का है जिसके साथ खेलना है और हल्के-फुल्के काम मे मैडम की मदद करनी है। लड़की तो स्कूल जाती है। बह इसकी लगभग हमउम्र है। दोनो की दोस्ती ख़ूब जमेगी, आदि-आदि। लक्ष्मी नाम था उसका।

माथे पे लकड़ियों के गट्ठर उठाकर जंगल से आती हुई श्यामबर्णी-किशोरियाँ प्रकृति के निरभ्र आकाश-तले पुरातन ऋषि-कन्याओं से कम आकर्षक नहीं लगी थी मुझे। हाँ, उनमे से एक की मुस्कुराती मगर घूरती तीक्ष्ण नजरों से मै सहम-सा गया। अभी-अभी बह जंगल से लकड़ियाँ लाकर जमीन पर पटकी थी। उसके अंग-प्रत्यंग मे श्वेद-मणियाँ अभी तक चमक रही थीं। पुष्ट बाजुओं और सुगठित तन से छलकती ताकत ऐसी, मानो उसके एक प्रहार से मेरे जैसे कई शहरियों की साँसें अटक जाँय।

अचानक एक रुखी आबाज मेरे कानो से टकराई- मै तो अब कभी काम करने इसे शहर नहीं भेजूँगा। बह उस उदितयौबना का पिता ही रहा होगा। नईम ने प्रश्न किया-क्यों? जबाब मे उसने हिकारत भरी नजरों से मेरी ओर देखा और बोला- एक शहरी साहब के यहाँ यह तीन महीने रही और मै जब इससे मिलने पहुँचा तो पता चला, इसे रोज़ साहब के कुत्ते की देखभाल करनी होती थी, घर का काम भी करना होता था और रात में बह कुत्ता मेरी बेटी के बिस्तर पर आकर सोता था। मीठी बातें करके ले जाने बाले शहर के लोग दिल के बड़े कंजूस होते हैं। नईम ने समझाया- सबको एक जैसा नहीं समझना चाहिए। यह साहब बैसे नहीं हैं, बल्कि यों कहिए कि समाज सेबा ही इनका पेशा है और शौक भी। और, इस क्षेत्र मे मेरे-जैसे इनके कई अभिकर्ता हैं। मै इनकी तरफ से बोलता हूँ कि कोई भी बेटी सर के यहाँ पढ़कर अपना भबिष्य बना लेगी। चंद दिनो मे ही लक्ष्मी के व्यक्तित्ब मे सुखद परिबर्तन देख लीजिएगा। नईम के इन तर्कों के बाबजूद मुझे उस व्यक्ति के आत्माभिमान से प्रसन्नता मिली। बस्तुतः नईम ने भी कुछ गलत नहीं कहा था। मेरे घर मे प्रायः फुलटाइम मेड-सर्बेंट के रूप मे बालिग लड़कियाँ ही रही थीं। बच्चे से लेकर बूढ़े तक किसी ने भी उनसे भेदभाब नहीं किया था। काम भी उतना ही जितना स्बेच्छा से कर सके। यह पहली मर्तबा थी कि किसी नाबालिग लड़की को न चाहते हुए भी मैने गृह-सहायिका के रूप मे स्बीकार किया था।

शाम करीब 7:00 बजे मै बापस राँची पहुँच गया। रास्ते-भर लक्ष्मी से बातें कर उसका मन बहलाने की कोशिश करता रहा। घर मे श्रीमतीजी ने उसकी ख़ूब आबभगत की। दूसरे दिन सबेरे स्कूल जाने से पहले उसकी जरूरत की सारी चीजें व्यबस्थित की। उसे ठीक से स्नान करना सिखाया। पर, शाम को जब मै ऑफिस से लौटा तो मुझे देखते ही उसकी आँखें गीली हो गईं। मैने पूछा- घर की याद आती है, बाबू? बस क्या था, सब्र का बाँध टूट गया। अश्रुबिंदु जो पहले से ही बेताब थे, बरसाती नदी की तरह उफनकर हहराते हुए निकल पड़े। घर का माहौल ग़मगीन हो गया। मैने समझाने का प्रयास किया- तुम्हारे माँ-पिताजी तीन-चार दिनो-बाद आएँगे। तुमसे बीच-बीच मे मिलते रहेंगे। और, तुम्हें तो पढ़ना भी है न! देखो, ये आंटी तुम्हें पढ़ाएँगी और स्कूल भी भेजेंगी। दो साल का मेरा बेटा उसे हतप्रभ निहार रहा था और बेटी, 'दीदी मत रो' कहते हुए उसकी आँखें पोंछ रही थी।

श्रीमतीजी ने उसका पूरा हुलिया बदल डाला था। लक्ष्मी अब बिखरी केशराशि की नहीं, साफ - सुथरी दो चोटियों बाली नये

रूप की अल्पबय किशोरी थी। दूसरे दिन शाम मे एक्वावर्ल्ड की सैर और फिर नक्षत्र-बन (पार्क) के फूलों और झूलों का आनंद। बह मायूस थी, मगर बेहतर थी। अब बीच-बीच मे हँसने लगी थी। पार्क मे बच्चों के साथ मैने उसे भी झूले पर बैठा दिया। एक सुंदर बुद्धिजीबी महिला ने तत्काल नाराज़गी दिखाते हुए अपने बच्चे को झूले से उतार लिया। शायद बह समझ गई थी कि यह 'मेड' है। यों, लक्ष्मी किसी भी तरह उस महिला के बच्चे से कम साफ-सुथरी नहीं थी। हाँ, गहरा काला रंग जरूर उसे हमलोग से कुछ पृथक कर रहा था।

इस तरह मेरे बच्चों को एक दीदी मिल गई थी। मज़ा तो लक्ष्मी को भी आने लगा, लेकिन रह-रह कर उसकी आँखों का सूनापन झलक उठता जो मेरे साथ-साथ मेरी श्रीमतीजी को भी आहत करने लगा था। चार-पाँच दिन गुजर गये, किंतु अच्छे खान-पान, रहन-सहन और मनोरंजन के बाबजूद लक्ष्मी की स्वाभाबिक खुशी बापस न आई।

एक दिन उसे रोते हुए हमलोग ने फिर देखा और फलत: सख्त निर्णय लिया। श्रीमतीजी ने ही आगे बढ़कर प्रस्ताब दिया- इस पहाड़ी प्रसून को अपने घर के गमले मे सजाना ठीक नहीं। लक्ष्मी सुबिधाओं से परिपूर्ण रहने के बाबजूद यहाँ स्वच्छंद नहीं, कैद ही रहेगी। इसलिए, इसे बापस अपनी माँ के आँचल की शीतल छाँब मे ही साँस लेने देना उचित होगा। हमलोग ख़ुद कष्ट झेल लेंगे लेकिन इसके बचपन को मुरझाने न देंगे। नईम को सूचित किया गया। उसने लक्ष्मी को बापस उसी सुकून-भरे माहौल मे पहुँचाया। किंतु, यह क्या? उसके परिबार के लोग उसे पहचान ही नहीं पा रहे थे। सुखद आश्चर्य से लबरेज़।

लक्ष्मी के अपेक्षाकृत सँबरे हुए बोल, तेल की खुशबू-संग सज्जित केशराशि, स्वच्छ और नये परिधान से आबृत सुकोमल तन और बिछड़कर अपनो से पुन: मिल जाने की उत्तेजक खुशी। माँ-बाप खुश थे कि उनकी बेटी एक अच्छे घर मे गई थी, कि जहाँ से उसका भबिष्य सँबर सकता था। मगर, ग़म था कि बह इस अबसर को लुटा चुकी थी।

कुछ दिनो के बाद नईम ने मुझे संदेश दिया- सर, लक्ष्मी के माता-पिता ने आपको बुलाया है। बह लक्ष्मी को आपके घर पुन: भेजना चाहते हैं। आपकी श्रीमतीजी से बो काफी प्रभाबित हैं। उन्होंने इतने कम समय मे लक्ष्मी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व निखार डाला। किंतु हमारी संबेदनाओं ने इस प्रस्ताब को अस्बीकार कर दिया। बच्चों को रोटी चाहिए, शिक्षा चाहिए, उनका बिकास चाहिए, किंतु इन सबसे बढ़कर सर्बप्रथम बच्चों को उनका परिबार चाहिए, माँ-बाप चाहिए जिसकी भरपाई दुनिया की अन्य कोई भी चीज नहीं कर सकती। बाल-श्रम मात्र कानून से ही नहीं, व्याबहारिक रूप से बंद होना चाहिए।

बचपन तो मासूम होता है न! बचपन की यादें मानब-जीबन की सबसे बेहतरीन धरोहर होती हैं जिनकी कोख से अनुपम महाकाव्य का सृजन हो सकता है। बचपन को बचाना है तो उसे माँ-बाप की परबरिश मे ही पलना होगा। बच्चों को स्कूल तक आने हेतु मज़बूर नहीं करना चाहिए बल्कि ख़ुद स्कूल को चलकर उन बच्चों तक पहुँचना चाहिए।

मैने कुछ पैसे नईम के हाथों भिजबाये थे- लक्ष्मी के लिए, जिसे उसके स्वाभिमानी माँ-बाप ने ग्रहण करने से इंकार कर दिया था। अल्लाह की देन नईम के बच्चे भी न जाने किस हाल मे होंगे। नीम हक़ीम के फेर मे पड़कर उसकी कुछ समय बाद ही अकाल मृत्यु हो गई।

काश! इन बच्चों के लिए मै कुछ कर पाता! काश! कोई सरकारी अथबा गैर सरकारी संस्था उनके बचपन को उजास से भर सकती।

रोटी कपड़ा और मकान, बचपन को हम दें सम्मान,
बाल श्रमिक मत बनने दें, बच्चे ज्यों होते भगबान।

मनोज कुमार झा 'मनु'
विकास अधिकारी
भारतीय जीवन बीमा निगम
☎ 7903151890

होली के रंग निराले

स्वर्णा की यह कॉलोनी में पहली होली है, उसके पति मानव बैंक में जॉब करते हैं छोटे से कस्बे में रहने वाले मानव की पोस्टिंग प्रमोशन के साथ बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय में हो गयी तो घर परिवार छोड़ कर स्वर्णा को भी साथ आना पड़ा। सालों तक ससुराल में बिना पति के रहने के बाद साथ रहने का सुख मिला था उपर से पहली होली जिसमे वो अकेले साथ रहने वाले थे। जहां सास ससुर का कोई बंधन नही। ससुराल का कोई नियम कायदा नही। उसके पांव जमीन पर नही पड़ रहे थे मारे खुशी के। आज होली जलनी है, कॉलोनी में ज्यादा परिचय तो नही हुआ है मगर बच्चे होलिका दहन की तैयारी करते दिखाई दे रहे हैं। रात में सब के साथ मिलकर होली जलाएंगे ये सोच वह मन ही मन खुश रही है। जैसे ससुराल में घर के पास चौराहे पर सब इकट्ठा होते, फाग गाई जाती, विधि विधान से पूजा कर फिर होली जलाते और ढेर सारा गुलाल हवा में बिखर जाता। बड़ो के पैर छूकर आशीर्वाद लेना, छोटो को आशीष देना कितना अच्छा लगता था वहां

उसे रात का बेसब्री से इंतजार था। होली पर बस एक दिन की छुट्टी है इसलिए घर जाना नही हो पायेगा ये सोच मानव थोड़ा उदास था, पहली बार होली बिना परिवार के होगी। मगर स्वर्णा की खुशी देखकर उसे अच्छा लग रहा था। शाम ढलने लगी है चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। ससुराल में तो दोपहर बाद से मार्केट बन्द हो जाते थे। कानफोडू गानों की आवाज गूंजने लगती थी, होली है कि हुंकार, और होली के पकवानों की खुशबू से मुंह मे पानी आने लगता।यहां तो कोई हलचल नही। जाने कैसे मनाते होंगे होली?स्वर्णा सोच रही थी।

आठ बजे तो उसने होली का थाल सजाया, बच्चे बता गए थे 8 बजे होलिका दहन होगा। दोनो चौक पर पहुंचे तो देखा गिने चुने लोग इकट्ठा हैं। वो भी ग्रुप बनाकर बातें कर रहे हैं। कुछ मोबाइल से फोटो वीडियो बनाने में मग्न है। स्वर्णा ने होली की पूजा की और आकर मानव के पास खड़ी हो गयी। किसी की कोई प्रतिक्रिया नही। कोई हेलो हाय नही। सब अपने में मगन। भले ज्यादा समय नही हुआ कॉलोनी में आये ऐसा भी नही की फॉर्मल परिचय नही है। एक बुजुर्ग ने होली दहन किया, स्वर्णा ने उन्हें टीका लगाकर पैर छुए तो वो ठिठक से गए। फिर हंसकर बोले खुश रहो बेटी, नए आये हो लगता है यहां। जी कुछ समय हुआ है स्वर्णा ने जवाब दिया। सब औपचारिक सा

चलता रहा। लोग एक दूसरे को टीका लगाकर बधाई देते रहे, बच्चे फिर से सेल्फी लेने में लग गए। महिलाएं बतियाने लगी आपस में और पुरुष फ़्लान करने लगे कि किसके यहां बैठकर पीने की महफ़िल जमाई जाए।

मानव और स्वर्णा सबसे मिले टीका लगाया और फिर खड़े हो गए। स्वर्णा ने कहा चलो जी यहां रुकने से कोई फायदा नही। वो निकलने लगे तो किसी ने पूछा भी नही।

होली की सुबह से दोनो होली के लिये तैयार होकर बैठ गए। दस बज गए कोई हलचल नही। बच्चो की थोड़ी बहुत आवाज आ जाती थी कुछ कुछ देर बाद। मानव बोले मैं बाहर देख कर आता हूँ शायद कहीं इकट्ठा हुए हों सब।

पूरी कॉलोनी का एक चक्कर मार कर वापस आ गए सूखे के सूखे। जो बच्चे मिले वो इस डर में रंग नही डाले की नए हैं क्या पता बुरा मान जाएं अंकल। सुनो, इधर आओ। स्वर्णा को पुकारा मानव ने। जैसे ही वो पास आई हाथों में भरा गुलाल उसके गालों में लगाकर मानव ने कहा, छोड़ो सबको। हम दोनों हैं न फिर किसी की क्या जरूरत, चलो आंगन में जम कर रंग खेलेंगे। ये शहर है यहां के लोग होली को गंवारों का त्योहार मानते हैं। शायद ये अपनी जड़ से उखड़ चुके हैं। यहां के लोग क्या जाने पारम्परिक त्योहारों की मिठास उसका मजा। हम ऐसे न हो जाएं इसलिये चलो दोनो मिलकर होली खेलें। म्यूजिक सिस्टम पर होली के गीत लगाए और दोनो शुरू हो गए होली का आनंद लेने को।

संजय मृदुल
भरत कुटीर, भावना नगर
खमार डीह, चिल्फी हाइट्स के पास
रायपुर, छत्तीसगढ़
☎ 9098177600

परीक्षा पर चर्चा

- प्रियंका सौरभ रिसर्च स्कॉलर इन पॉलिटिकल साइंस, हरियाणा

"परीक्षा पर चर्चा" 2018 से एक वार्षिक कार्यक्रम रहा है। इस कार्यक्रम में, भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूरे देश के अभिभावकों, शिक्षकों और छात्रों से बातचीत करते हैं। वे प्रवेश और बोर्ड परीक्षाओं को सहज और आसान तरीके से कैसे हल किया जाए, इस पर सलाह देते हैं। इस कार्यक्रम के प्रतिभागियों को एक प्रतियोगिता के माध्यम से चुना जाता है। इस कार्यक्रम में भाग लेने का मौका मिलने के अलावा, प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रधानमंत्री से आमने-सामने बात करने का भी अवसर मिलता है। परीक्षा पर चर्चा का उद्घाटन संस्करण 16 फरवरी, 2018 को हुआ था। 29 जनवरी, 2024 को होने वाले 7वें संस्करण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "पर्याप्त नींद लें और रील देखने में समय बर्बाद न करें।" 2025 में आयोजित होने वाले आठवें पीपीसी में इस साल परीक्षा से सम्बंधित तनाव को कम करने पर विशेष ज़ोर दिया गया था। परीक्षा पर चर्चा 2025 कार्यक्रम में सद्गुरु (आध्यात्मिक नेता) , दीपिका पादुकोण (अभिनेता) , विक्रांत मैसी (अभिनेता) , मैरी कॉम (ओलंपिक चैंपियन, बॉक्सर) और अवनी लेखरा (पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता) जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति शामिल हुए। इन प्रतिष्ठित अतिथियों ने तनाव प्रबंधन, उद्देश्यों को पूरा करने और प्रेरणा बनाए रखने पर अपने अनुभव और व्यावहारिक विचार साझा किए।

10 फरवरी, 2025 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने परीक्षा पर चर्चा 2025 के आठवें संस्करण के दौरान छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों के साथ बातचीत की। यह वार्षिक आयोजन छात्रों को परीक्षा की चिंता, करियर प्लानिंग और व्यक्तिगत विकास जैसे मुद्दों पर बात करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इस वर्ष के आयोजन के लिए 330 करोड़ से अधिक छात्रों, 2071 लाख शिक्षकों और 551 लाख अभिभावकों ने पंजीकरण कराया है, जो देश के युवाओं पर इस पहल के निरंतर प्रभाव को दर्शाता है। पीएम मोदी के अनुसार, कक्षा 10 और 12 में 40-50% छात्र असफल होते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह उनका अंतिम उद्देश्य है। शैक्षणिक और व्यक्तिगत सफलता और असफलता के बीच अंतर को पहचानना महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने क्रिकेट खिलाड़ियों का उदाहरण दिया, जो दिन के अंत में अपनी गलतियों पर विचार करते हैं और उनमें सुधार करते हैं; छात्रों को भी ऐसा ही करना चाहिए। उनके अनुसार, आपका जीवन वही है जो आपके अंक

बताते हैं, न कि आप। पीएम ने छात्रों को दबाव को नज़रअंदाज़ करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि एक बल्लेबाज की तरह जो स्टेडियम के शोर और नारों को नजरअंदाज कर गेंद पर ध्यान केंद्रित करता है, छात्रों को भी तनाव के बजाय अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

उन बच्चों का क्या होता है जो 30 से 40 प्रतिशत की दर से स्कूल में फेल हो जाते हैं? देखिए, असफलता जीवन के अंत का संकेत नहीं है। आप जीवन में सफल होना चाहते हैं या किताबों के माध्यम से, यह आप पर निर्भर करता है। अपनी सभी असफलताओं को शिक्षण के अवसर में बदलना जीवन में सफलता प्राप्त करने की एक रणनीति है। अपनी गलतियों को अपने शिक्षण के क्षण बनाएँ। जीवन केवल परीक्षा नहीं है। इसे समग्र रूप से देखा जाना चाहिए। हमें कुछ खासियतें देने के अलावा, भगवान ने हमारी कुछ खामियाँ भी रखी हैं। खूबियों पर ध्यान दें। आपसे यह नहीं पूछा जाएगा कि आपको 10वीं और 12वीं कक्षा में कितने ग्रेड मिले। यह जीवन होना चाहिए, न कि अंक। रटने की शिक्षा के विपरीत, प्रधान मंत्री मोदी ने समग्र शिक्षा और रचनात्मक शिक्षा के महत्त्व पर ज़ोर दिया। छात्रों से सॉफ्ट स्किल सीखने और पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेने का आग्रह किया गया। प्रधानमंत्री ने छात्रों को सलाह दी कि परीक्षाओं को सीखने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि बोझ के रूप में। उन्होंने सलाह दी कि छात्रों को ग्रेड से ज़्यादा ज्ञान को प्राथमिकता देनी चाहिए। अच्छा व्यवहार, अनुशासन और अभ्यास-अधिकारों के लिए शोर मचाना नहीं-नेतृत्व की पहचान हैं। सफल शिक्षा के लिए स्वस्थ भोजन और पर्याप्त नींद के महत्त्व पर बल दिया। छात्रों से मानसिक स्वास्थ्य के लिए बाहर समय बिताने और शारीरिक गतिविधि के स्तर को बढ़ाने का आग्रह किया।

पीएम मोदी ने छात्रों को सलाह दी कि वे परीक्षाओं से डरने के बजाय इसे एक व्यक्ति के रूप में विकसित होने के अवसर के रूप में देखें। उन्होंने दावा किया कि परिवार और सामाजिक वातावरण कभी-कभी छात्रों पर दबाव डाल सकते हैं, जो अवांछनीय है। परिवार के सदस्यों या रिश्तेदारों का यह दबाव कि बोर्ड परीक्षाएँ बहुत ज़रूरी हैं, छात्रों को अत्यधिक चिंतित और तनावग्रस्त बना देता है। आपका जीवन एक परीक्षा के साथ समाप्त नहीं होता है। यह सिर्फ़ एक मील का पत्थर है जिसे आपको हासिल करना है। अगर आप बाहरी दबाव को नज़रअंदाज़ करेंगे तो आप ज़्यादा आत्मविश्वास महसूस करेंगे। पीएम मोदी के अनुसार, माता-पिता को अपने बच्चों की बोर्ड परीक्षा की तैयारी में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए और उनकी ताकत और कमज़ोरियों पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने दावा किया कि माता-पिता अपने व्यस्त शेड्यूल के कारण अपने बच्चों की परीक्षा की तैयारी में भाग नहीं ले पाते हैं। परीक्षा देते समय, पीएम मोदी ने छात्रों को चुनौतीपूर्ण प्रश्नों को समझने से शुरुआत करने की सलाह दी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "आपको हर विषय पर समान ध्यान देना चाहिए।" यह सुझाव दिया गया है कि छात्र सरल विषयों या प्रश्नों से शुरुआत करें। हालाँकि, मेरी सलाह है कि चुनौतीपूर्ण प्रश्नों से शुरुआत करें क्योंकि इससे आपका दिमाग़ साफ़ रहेगा और आप उन्हें बेहतर तरीके से संभाल पाएँगे। बाद में जब आपका दिमाग़ थक जाएगा, तो सरल प्रश्नों का उत्तर देना आपके लिए आसान भी होगा।

प्रियंका सौरभ, हरियाणा
☎ 7015375570

रील्स व साहित्य

इन दिनों रील्स और उसके कंटेंट की अच्छे और बुरे कारणों से खूब चर्चा होती रहती है। आजकल रील्स देखना बहुत ही लोकप्रिय होता जा रहा है। चकित करने वाली बात यह है कि रील्स के विषयों का फलक इतना व्यापक है कि वो किसी को भी घंटों तक रोके रख सकता है। अब तो स्थिति यह हो गई है कि रील्स में दिखाई गई बातों को सत्य माना जाने लगा है। रील्स की दुनिया में भविष्यवक्ताओं की बाढ़ आई हुई है। कोई आपके नाम के आधार पर तो कोई आपके नाम में प्रयुक्त अक्षरों की संख्या को जोड़कर आपका भविष्य बता रहा है। कई महिलाएं भी भविष्य के बारे में बात करती नजर आएंगी। वो भी बता रही हैं। कि शुक्रवार को पति के साथ किस प्रकार का व्यवहार करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। कोई महिला यह बताती है कि पत्नी को हर दिन पति के पाँव दबाने चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी जी भी विष्णु जी के पांव दबाती हैं। कोई महिला यह बताती है। कि अमुक अंक लिखकर अपने घर की तिजोरी में रख दो या अमुक नंबर के नोट अगर आपने अपने घर में पैसे रखने के स्थान पर रख दिया तो आपके पास धन की कोई कमी नहीं होगी। इसके अलावा, स्वास्थ्य विषय पर भी इनके बहुत सारे रील्स हैं कि यह खाना चाहिए या फिर यह नहीं खाना चाहिए।

इतना ही नहीं, रील्स की दुनिया में बिजनेस करने के तौर तरीकों और और जमाधन को दोगुना और तिगुना तक करने के नुस्खे भी बताए जाने लगे हैं। ये सब इतने रोचक अंदाज में बताया जाता है कि देखनेवाला मोबाइल से चिपका रहता है। आमतौर पर यह देखा जाता है कि अगर रील्स देखना आरंभ कर दें तो घंटे दो घंटे तो ऐसे ही निकल जाते हैं।

कहना न होगा कि रील्स की दुनिया एक ऐसी मनोरंजक दुनिया है जो लोगों को बेहतर भविष्य का सपना भी दिखाती है। लोगों को पैसे कमाने से लेकर घर परिवार की सुख समृद्धि के नुस्खे बताती है। ये नुस्खे कितने सफल होते हैं यह पता नहीं, क्योंकि इस तरह का कोई रील देखने में नहीं आता है कि फलां नुस्खे से उनका लाभ हुआ या इस तरह की कोई केस स्टडी भी अभी तक समने नहीं आई हैं कि फलां नंबर के नोट तिजोरी में रखने से उसकी आमदनी निरंतर बढ़ती चली गई। परंतु हां, इतना अवश्य है कि रील्स एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में ले जाता है, जहां सबकुछ मोहक और मायावी लगता है। रील्स की दुनिया को हल्के-फुल्के मनोरंजन के तौर पर लिया जाना चाहिए। लिया जा भी रहा है। लेकिन इन दिनों साहित्य, कला और कविता से जुड़े कुछ ऐसे रील्स देखने को मिले जो चिंतित करते हैं। हाल के दिनों में कई ऐसे रील्स देखने को मिले जिनमें

सेलिब्रिटी कबिता पढ़ते नजर आ रहे हैं। बो कबिता किसी और की पढ़ते हैं और रील्स के डिस्क्रिप्शन में कबि का नाम लिख देते हैं। रोल में कहीं कबि का नाम नहीं होता है। सेलिब्रिटी की टीम उसको इंटरनेट मीडिया के बिभिन्न प्लेटफार्म पर पोस्ट कर देती है और अश्वत्थामा हतौ नरौ.... बाली ईमानदारी के साथ बीडियो के डिस्क्रिप्शन में कबि का नाम लिख देती है। होता यह है कि सेलिब्रिटी की पढ़ी गई कबिताओं का बीडियो इन प्लेटफार्म्स से डाउनलोड करके उनके प्रशंसक उसको फिर से उन्हीं प्लेटफार्म्स पर साझा करना आरंभ कर देते हैं। प्रशंसक अश्वत्थामा बाली ईमानदारी को समझ नहीं पाते और बो सेलिब्रिटी की कबिता के नाम से ही उसे साझा करना आरंभ कर देते हैं। दिनकर जी जैसे श्रेष्ठ कबियों की कबिताएं तो लोगों को पता है तो उसमें यह खेल नहीं हो पाता है, लेकिन कई नबोदित कबि की कबिताएं सेलिब्रिटी के नाम से चलने लगती हैं। कबि को पता भी नहीं चलता और बह कबिता सेलिब्रिटी के नाम हो जाती है। रील्स की दुनिया में इस बेईमानी से कई साहित्यिक प्रतिभा कुंद हो जा रही हैं। इसका निदान कहीं न कहीं बौद्धिक जगत को ढूंढना ही चाहिए। इंटरनेट मीडिया पर बाढ़ की तरह संचालित इन रील्स का एक और नुकसान जो साहित्य का हो रहा है, बह यह कि पौराणिक ग्रंथों से बगैर संदर्भ के किस्सों को उठाकर प्रामाणिक तरीके से पेश कर दिया जा रहा है। पिछले दिनों जब इलाहाबादिया का मामला सामने आया था तो उसके कुछ दिनों बाद एक रील मेरी नजर से गुजरा। एक बेहद लोकप्रिय ब्यक्ति उसमें एक किस्सा सुना रहे थे। किस्से में बह बता रहे थे कि कालिदास अपना ग्रंथ कुमारसंभब पूरा क्यों नहीं कर पाए? उनके हिसाब से कालिदास जब कुमारसंभब में पार्बती और शंकर जी की रतिक्रिया के बारे में लिखने जा रहे थे, तब पार्बती जी को पता चल गया। उन्होंने सरस्बती जी को बुलाया और कहा कि यह कौन सा कबि है और क्या लिखने जा रहा है। इसे रोकना होगा। फिर किस्सागोई के अंदाज में यह प्रसंग आगे बढ़ता है। आगे बह बताते हैं कि सरस्बती जी ने क्रोधित होकर उनको श्राप दे दिया और बो बीमार हो गए। इस कारण से कुमारसंभब पूरा नहीं हो पाया। यहां हमें यह समझना चाहिए कि कालिदास बीमार अबश्य हुए थे। उन्हें पक्षाघात हो गया और बह भी सरस्बती के श्राप के कारण, परंतु इसे कहां से उद्धृत किया गया था, यह तथ्य भी सामने आना चाहिए। इस पूरे प्रसंग में शब्द कुछ अलग हो सकते हैं, परंतु उनका भाब यही था। इस तरह के प्रकरणों में चिंता की बात यह है कि यह पूरा प्रसंग जैसे सुनाया गया, बह बिश्वसनीय सा लगता है। इसे सुनकर नई पीढ़ी के लोगों में से कई सच मान सकते हैं, बिशेषकर बे जो उनके प्रशंसक हैं। इससे तो एक अलग तरह का इतिहास बनता है। बौद्धिक समाज को इस तरह के प्रसंगों पर बिचार करते हुए इस पर बिमर्श को बढ़ाबा देना चाहिए। चिंता तब और अधिक होती है, जब इस तरह के रील बनानेबाले लोग लोकप्रिय होते हैं। रील्स की दुनिया से पहले फेसबुक ने साहित्य का बहुत नुकसान किया, बिशेषकर कबिता का फेसबुक के लाइक्स और कमेंट ने कबियों और रचनाकारों के दिमाग में यह बैठा दिया कि अब उनको आलोचकों की आबश्यकता ही नहीं है। बो सीधे पाठक तक पहुंच रहे हैं। ऐसे लोग यह मानते थे कि आलोचक पाठकों तक पहुंचने का एक जरिया है। जबकि आलोचकों की भूमिका उससे कहीं अलग होती है। आलोचक रचना के अंदर प्रबेश करके उसकी गांठों को खोलकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। रचनाओं में अंतर्निहित भाबों को आसान शब्दों में पाठकों को समझाने का प्रयत्न करता है। इससे रचनाकार और पाठक के बीच एक ऐसा संबंध बनता था जो फेसबुक के कमेंट से नहीं बन सकता है। फेसबुक पर जिस तरह के कमेंट आते हैं, उनमें से अधिकतर तो प्रशंसा के ही होते हैं जो रचना का न तो आकलन कर पाते हैं और न ही रचना के भीतर प्रबेश करके उसकी परतों को पाठकों के लिए खोलते हैं। कुल मिलाकर जो परिस्थितियाँ बन रही हैं उनमें प्रमाणिक स्रोतों के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए साहित्यकारों को आगे आना होगा। प्रो. जगदीश्वर चतुर्बेदी बर्षों से आह्वान कर रहे हैं कि साहित्यकारों को इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म्स पर लिखना चाहिए। उनके नहीं लिखने से अनर्गल लिखनेबालों का बोलबाला होता जा रहा है। तकनीक को साहित्यकारों को अपनाना चाहिए और उसके नए माध्यमों को पाठकों तक पहुंचने का औजार बनाना चाहिए।

विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, पंजाब
☎ 9465682110

दोस्त v/s दीदी

बहुत दिनों बाद आज सूर्य के प्रकाश से गर्माहट का एहसास पाने के लिए सारे बच्चे अपनी क्लासेज खत्म करके फैकल्टी के बाग में बैठकर धूप सेंक रहे थे। मेरी मित्र मंडली में भी तीन दोस्त थे।

अनमोल, जिससे आप परिचित हैं। और बाकी अपनी ही फैकल्टी के दो और नए छात्र, जो हमारे दोस्त बनने की प्रक्रिया में लंबित हैं। बाकी वो दोनों आपस में अच्छे दोस्त हैं। हम चारों लोग अपने अपने बारे में बखान करते हुए खूब लंबी लंबी फेक रहे थें। तभी एक सुंदर, दिखने में संस्कारी लेकिन जींस और टीशर्ट पहनी हुई कन्या हमारी मंडली में शायद शामिल होने के प्रस्ताव के साथ आ बैठी। थोड़े बातचीत के बाद मुझे पता चला कि वो लंबित दोस्तों के महिला मित्र की मित्र थीं। हमारे मंडली में किसी नारी के आने से अनमोल जी को यह बात बड़ी नागवार गुजरी। चूंकि वो मेरे अब परम मित्र की श्रेणी में थे, तो उन्होंने अपनी नाराजगी मेरे से जताते हुए कहा कि देखिए आदित्य जी! ये लड़कियां आज हमारे मंडली में हैं और कल किसी और ग्रुप में रहेगी। इन सबका मैं अनुभव कर चुका हूं।

ये सब सुनते ही मैं यह तय कर लिया कि अनमोल जी की हाल ही में कटी है। तभी ये देवदास बनते फिर रहे हैं।

खैर, थोड़ी बहुत खोदा खोदी के बाद पता चला कि मेरा गेस सही था। अनमोल जी की 12वीं कक्षा के बाद एक प्रेम कहानी शुरू हुई थी, लेकिन किसी वजह से कट गई। अब मैंने यह निर्णय लिया कि अगर ये मेरे लंबित मित्र की महिला मित्र की मित्र हमारी मंडली में रहेंगी, तो हम उन्हें दीदी कहकर बुलाएंगे। ताकि खतरे की स्थिति पैदा न हो। दोस्त नहीं दीदी की घोषणा कर दी गई। लेकिन उन दीदी का कहना था कि अरे तुम लोग अभी भी बच्चे हो। ये सब हमारे स्कूलों में होता था, यह कॉलेज लाइफ है। चिल करो गाइज!

उनकी ये सब बातें सुनकर मैंने थोड़ा सा ज्ञान दिया और ये चेतावनी भी दी कि न मानने की स्थिति में हमारी यह मंडली भंग हो जाएगी। और हुआ भी ऐसा ही। एक समय ऐसा आया जब मित्रता की रेखा धुंधलाती गई।

मुझे और अनमोल को मंडली छोड़ने को मजबूर होना पड़ा। उसके बाद हम दोनों ने अपने मित्रता को और अच्छे से निभाने और ऐसे ही खतरों से बचते रहने का प्रण लेकर एक नए पथ की ओर अग्रसर हुए। जहां किसी तीसरे व्यक्ति को आज तक जगह नहीं मिली। और हम आज भी एक अच्छे मित्र हैं, और रहेंगे भी।

"मानते - मानते मान गए हम, अभिलाषा को जान गए हम।
जिन्हें थी आरज़ू रस्में उल्फत की, बक्त आया और पहचान गए हम।।"

शेष अगले अंक में...

ए. के. प्रसाद
छात्र, कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
☎ *+91 725-8072-725*

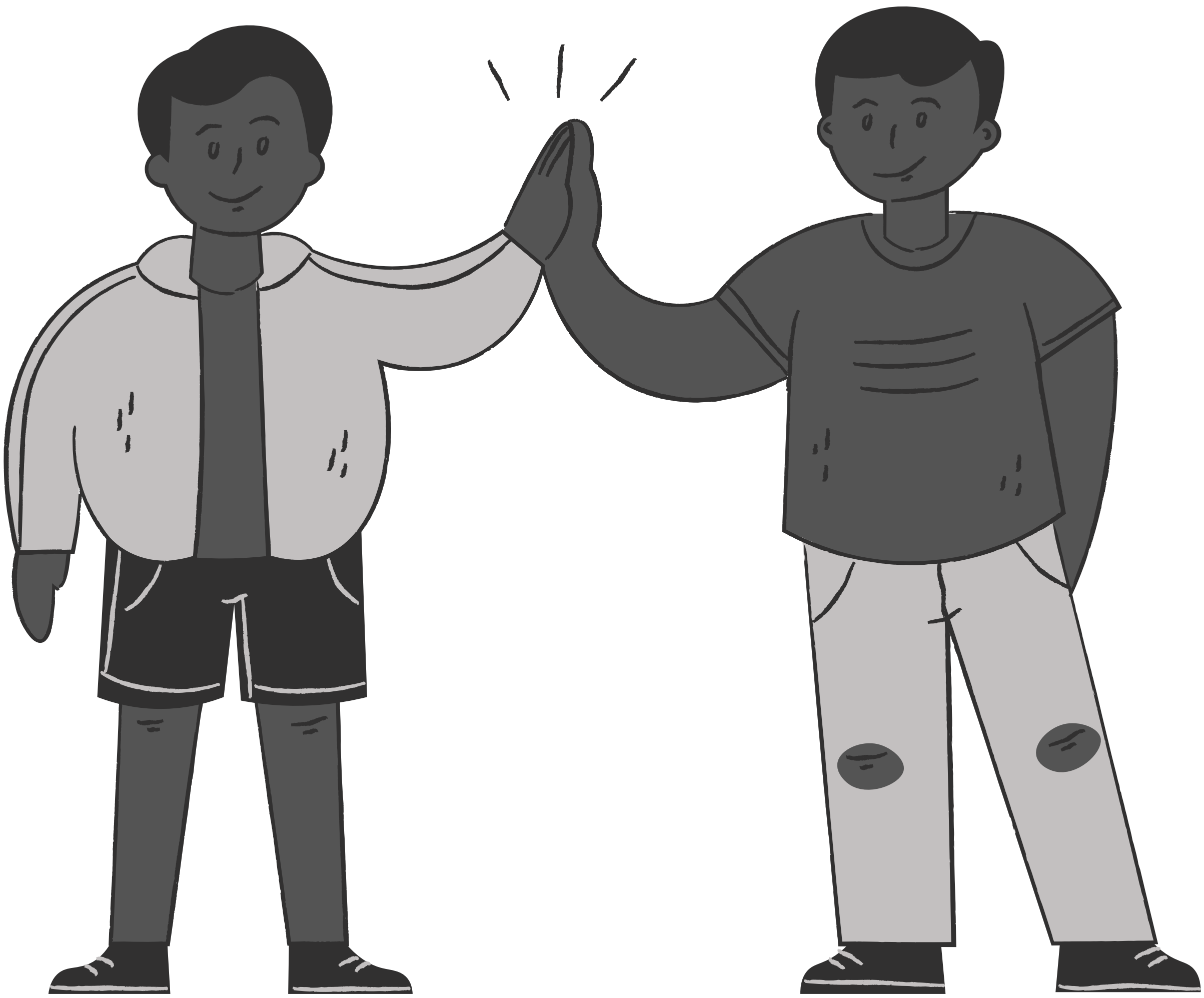

साहित्यिक
मासिक पत्रिका

Pranti

प्रान्ति इंडिया का वार्षिक सब्सक्रिप्शन

~~MRP ₹2500~~

आपके घर पर मात्र ₹1100 में

एक साल में 12 पत्रिकाएं

कृपया www.prantiindia.com/subscription पर जाएं।

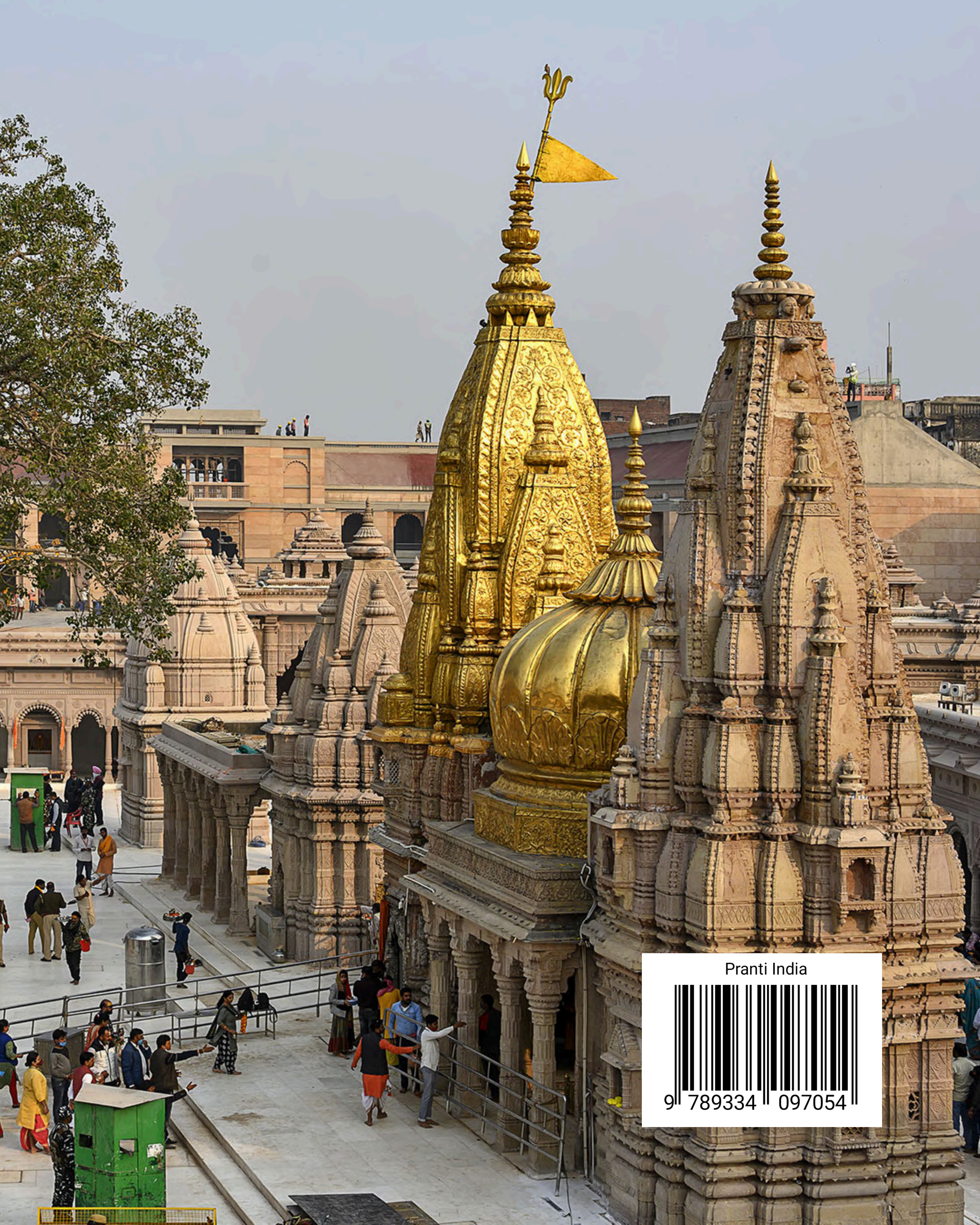

Pranti India
9 789334 097054